डॉ. भीमराव अम्बेडकर शासकीय महाविद्यालय पामगढ़

जांजगीर-चाँपा (छ.ग.)

धरोहर

महाविद्यालयीन e-पत्रिका 2020

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्य की कलम से

प्राचार्य की कलम से .....

आज समूचा विश्व एक ऐसी महामारी का सामना कर रहा है, जिसने हम सबको घर पर रहने को विवश कर दिया है। घर पर रहकर भी हम विविध माध्यमों से अपने विद्यार्थियों से जुड़े रहे, शिक्षा और सामयिक विमर्शों में सक्रिय रहे और आपदा के काल में सभी ने आत्मविश्वास और अनुशासन के महत्त्व को और भी बेहतर तरीके से समझा है। भौतिक रूप से सबसे दूर होकर विभिन्न माध्यमों से शिक्षक, छात्रों के संपर्क में रहे हैं। यह सब ई–स्रोत के कारण ही संभव हो पाया। शिक्षक और हमारे गैर शिक्षक कर्मचारी वर्ग ने यह यथासंभव प्रयास किया कि छात्रों का समय व्यर्थ न जाए। अस्तु हमने ये संकल्प किया कि छात्र-छात्राओं कि विचारों को माध्यम प्रदान करें| रचनाएँ सार्वभौमिक और सार्वकालिक होती हैं। **'धरोहर '** के इस अंक के संपादन और रूपाकार के लिए मैं IQAC और समग्र ' **धरोहर** टीम' को बधाई देता हूँ। प्राचार्य के रूप में ' **धरोहर**' ई–पत्रिका का यह अंक आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे जिस हर्ष का अनुभव हो रहा है उसे शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। आप सभी को मेरी बहुत–बहुत शुभकामनाएं! आओ हम सब मिलकर पामगढ़ के शिक्षा जगत को उन्नत बनाये.....

शुभकामनाओं के साथ .....

प्राचार्य
डॉ.भीमराव अंबेडकर
शास.महा.पामगढ़

Patron - Mr. B.P. Patley

Chief Editor: Dr. Ashish Tiwari

(IQAC COORDINATOR)

Editors - Dr. D.S. Thakur (Hindi)

Mr. J. P. Sahu (Commerce)

Dr. S.R. Mahendra (Political Science)

Mrs. Alka Shukla (English)

Ms. Mira Tandon (Commerce)

सम्पादकीय

ऐसा प्रतीत होता है जैसे पूरा विश्व एक विचित्र शून्यता की ओर जा रहा है। वैश्विक प्रकोप ने पूरी मानवता के अंतर्मन को झकझोर दिया है। ज्ञान और विज्ञान भी लगता है शून्य पड़ गए हैं। अब प्रश्न यह नहीं है कि यह विभीषिका कब, कहाँ और कैसे उत्पन्न हुई? अब मुख्य लक्ष्य इस पर विजय प्राप्ति का है। प्रकृति के विधान को समझकर अपने आचरण में सुधार करना शायद समय की सबसे बड़ी माँग है। परिस्थिति की पाठशाला ही व्यक्ति को वास्तविक शिक्षा देती है। कोई भी समस्या स्थायी नहीं होती। सत्य है कि कठिन एवं असामान्य घड़ियों में जो अपने धैर्य और आत्मविश्वास को अविचल रखता है वही विषम से विषम समस्या और परिस्थिति से बाहर निकल सकता है। अंतर्मन में संघर्ष हो और फिर भी मुस्कुराता चेहरा हो– जीवन के रंगमंच पर यही मानव–जीवन का श्रेष्ठ अभिनय है। इतिहास साक्षी है कि वर्तमान में फैली महामारी से भी अधिक भयंकर महामारियों को मानवता न केवल झेल चुकी है अपितु उन पर विजय भी प्राप्त कर चुकी है। विश्वभर के वैज्ञानिक, चिकित्सक, अनुसंधानकर्त्ता अपनी–अपनी सरकारों के सहयोग से इस प्रकोप का निदान खोजने में सक्रिय हैं। सुखद बात तो यह है कि अच्छे परिणाम आने के संकेत मिलने भी प्रारंभ हो चुके हैं। भारत ने एक विशाल जनसंख्या वाला देश होने के बावजूद प्रभावी कदम उठाए और स्थिति को नियंत्रण में रखने में काफी हद तक सफलता प्राप्त की है। भारतीय जनमानस ने भी सरकार के साथ–साथ धैर्य और संयम बरतते हुए सहयोग किया। अभी ये विषम परिस्थितियाँ समाप्त नहीं हुई हैं। इसलिए निरंतर सकारात्मक सोच के साथ सब को मिलकर इनका मुकाबला करना होगा। रास्ता अभी लम्बा है। वर्ष 2019–2020 के 'धरोहर ' की रूपरेखा, सामग्री–संचयन एवं साजसज्जा की संकल्पना की गयी। इस अंक की निर्माण–प्रक्रिया में प्राचार्य प्रो. बी.पी. पाटले का दिशानिर्देश एवं अमूल्य समय हमें निरंतर मिलता रहा। मैं संपादक मंडल की ओर से उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ। इस वर्ष महाविद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. डी. एस. ठाकुर एवं प्रो. जे. पी. साहू के मूल्यवान सुझावों एवं सहयोग के लिए संपादक मंडल की ओर से धन्यवाद।

संपादक मंडल के अपने सहयोगियों– प्रो. जे. पी. साहू, डॉ. एस. आर. महेंद्र, श्रीमती अलका शुक्ला एवं कु. मीरा टंडन का भी मैं धन्यवाद करता हूँ जिनके परिश्रम एवं सहयोग से पत्रिका का रूपाकार संभव हो सका।

धन्यवाद.....

डॉ. आशीष तिवारी

IQAC Coordinator

युवाओं का संगठन

जे.पी. साहू
सहायक प्रध्यापक वाणिज्य

युवाओं को संगठित एवं सक्रिय बनाने के लिए इन दिनों जगह–जगह प्रयास चल पड़े है। किसी भी आंदोलन की सफलता के लिए बुजुर्गो के अनुभव और युवाओं के उत्साह का संयोग होना जरूरी होता है, अस्तु समय की मांग के अनुरूप युवा शक्ति को नवसृजन आंदोलन के लिए संगठित और नियोजित तो किया ही जाना चाहिए।

युवक–युवतियों में उमंग, उत्साह, जोश खूब होता है। एक बार लहर चल पड़े तो वे उस दिशा में बड़ी संख्या में उमंग के साथ चल पड़ते है। इसलिए प्रत्यक्ष कार्यक्रमों में उन्हें लगाना आसान होता है। समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान उन्हीं का हो सकता है जो पहले स्वयं के चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार में परिवर्तन ला सकते हैं। युवा पीढ़ी में स्थूल कार्यक्रमों के प्रति तो आकर्षण होता है किन्तु आज के विचार प्रदूषण भरे माहौल में आत्म परिष्कार जैसे मूल आधारों की ओर उनका ध्यान ही नही जाता।

युवा शक्ति को प्रेरणा एवं मार्गदर्शन देने हेतु किसी विद्वान ने चार तेजस्वी नारे दिये हैं :–

1. स्वस्थ्य युवा – सबल राष्ट्र

2. शालीन युवा – श्रेष्ठ राष्ट्र
3. स्वावलम्बी युवा – संपन्न राष्ट्र
4. सेवाभावी युवा – सुखी राष्ट्र

इन नारों में उत्साह के साथ ऐसा दिशा बोध भी है जिसके आधार पर नई पीढ़ी को वांछित व्यक्तित्व संपन्न बनाया जा सकता है। अभीष्ठ है कि युवक–युवतियां स्वस्थ,शालीन, स्वालंबी तथा सेवाभावी बने तथा अपने विचार को ईश्वरोन्मुख न बना पाये ंतो राष्ट्रोन्मुख तो बना ही सकते हैं।

1. **स्वस्थ युवा –** कहा जाता है कि पहला सुख निरोगी काया। उदा.– काया को धर्म साधना का आधार कहा गया है। निश्चित रूप में जिस देश के युवा शरीर और मन से स्वस्थ्य होंगे वह राष्ट्र सबल और मजबूत राष्ट्र बनकर उभरेगा। स्वास्थ्य के लिए पहले हल्का योग और व्यायाम करने–कराने की प्रेरणा दी जाए।
2. **शालीन युवा –** युवा पीढ़ी शरीर से स्वस्थ और बलिष्ठ बने यह अच्छा है किंतु शरीर से बलिष्ठ तो गुण्डे और आतंकवादी भी होते है इसलिए स्वस्थ होने के साथ–साथ उन्हें शालीन बनाने के उपाय करनी होगी। शालीनता के अंतर्गत पहले वाणी व्यवहार का शिष्टाचार तथा स्वच्छ मन के तमाम सूत्रों का अभ्यास कराया जा सकता है।

ßयुवा बनें सज्जन शालीन।
दे समाज को दिशा नवीन।।Þ

3. **स्वालम्बी युवा –** सच कहा जाए तो युवाओं को सहज ही स्वालम्बी होना चाहिए। बच्चे और बूढ़े परावलम्बी भी रहें तो क्षम्य है।
4. **सेवाभावी युवा –** युवावस्था ऊर्जा का भंडार लेकर आती है। प्रत्येक युवक–युवती में अपनी व्यक्तिगत जरूरतें पूरी करने की तुलना में कई गुनी कार्य क्षमता होती है। यदि ऊर्जा को दिशा न दी जाए तो वह अवांछनीय दिशा मे बह जाती है। युवाओं की अतिरिक्त ऊर्जा को यदि समाजहित, राष्ट्रहित जैसे सेवा कार्यो में न लगाया जायेगा तो वह समस्याएं पैदा करने में ही लग जाएगी।

किसी भी देश की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक प्रगति का आधार है ßयुवा पीढ़ीÞ। युवाओं को चाहिए कि वे इस दिशा मे

सत्य– निष्ठा पूर्वक कार्य करें। अतः युवा शक्ति को आवाहन किया जाता है कि वे समाज एवं राष्ट्र के हित में रचनात्मक, सृजनात्मक और सकारात्मक कार्य करें। हिंसा, आगजनी, पथराव ऐसे विनाशकारी आंदोलन प्रदर्शन मे भाग न लेवें। तभी समाज एवं राष्ट्र में सुख शांति की स्थापना होगी और हमारा राष्ट्र विश्वगुरू के पद पर पुनः प्रतिष्ठित होगा।

डॉ. भीमराव अंबेडकर की जीवनी व शिक्षाएं

आरंभिक जीवन ----- भारत को संविधान देने वाले महान नेता डॉ. भीमराव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के एक छोटे से गांव में हुआ था। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल और माता का नाम भीमाबाई था। और उनकी पत्नी का नाम रमाबाई था। अपने माता-पिता की चौदहवी संतान के रूप में जन्मे डॉ. भीमराव अंबेडकर जन्मजात प्रतिभा संपन्न थे। भीमराव अंबेडकर का जन्म महार जाति में हुआ था। जिसे लोग अछूत और बेहद निचला वर्ग मानते थे।

बचपन में भीमराव अंबेडकर के परिवार के साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था। भीमराव अंबेडकर के बचपन का नाम रामजी सकपाल था। अंबेडकर के पूर्वज लंबे समय तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में कार्य करते थे, और उनके पिता ब्रिटिश भारतीय सेना की माऊ छावनी में सेवा में थे। भीमराव के पिता हमेशा ही अपने बच्चों की शिक्षा पर जोर देते थे।

शिक्षा ----- बालक भीमराव का प्राथमिक शिक्षण दापोली और सतारा में हुआ। मुंबई के एलफिनस्टोन स्कूल से वह 1960 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। इस अवसर पर एक अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया और उसमें भेट स्वरूप उनके शिक्षक श्री कृष्णाजी अर्जुन केलुसकर ने स्वलिखित पुस्तक "बुद्ध चरित्र" उन्हें प्रदान की। बड़ौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड की फेलोशिप पाकर भीमराव ने 1912 में मुंबई विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा पास की।संस्कृत पढ़ने पर मनाही होने से वह फारसी लेकर उत्तीर्ण हुए।

अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय ---- बी.ए. के बाद एम.ए. के अध्ययन हेतु बड़ौदा नरेश सयाजी गायकवाड की पुनः फेलोशिप पाकर वह अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय में दाखिल हुए। सन 1915 में उन्होंने अपने स्नातकोत्तर उपाधि की परीक्षा पास की। इस हेतु उन्होंने अपना शोध "प्राचीन भारत का वाणिज्य" लिखा था। उसके बाद 1916 में कोलंबिया विश्वविद्यालय अमेरिका से ही उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की, उनके पीएच.डी. शोध का विषय था ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकेंद्रीकरण।

लंदन स्कूल आफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलीटिकल साइंस ---- फेलोशिप समाप्त होने पर उन्हें भारत लौटना था अतः वे ब्रिटेन होते हुए लौट रहे थे। उन्होंने वहां लंदन स्कूल आफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलीटिकल साइंस में एम. एससी. और डी. एस सी. और विधि संस्थान में बार - एट - लां की उपाधि हेतु स्वयं को पंजीकृत किया और भारत लौटे। सबसे पहले छात्रवृत्ति की शर्त के अनुसार बड़ौदा नरेश के दरबार में सैनिक अधिकारी तथा वित्तीय

सलाहकार का दायित्व स्वीकार किया। पूरे शहर में उनको किराए पर रखने को कोई तैयार नहीं होने की गंभीर समस्या से वह कुछ समय के बाद ही मुम्बई वापस आए।

दलित प्रतिनिधित्व ----- वहां परेल में डबक चाल और श्रमिक कॉलोनी में रहकर अपनी अधूरी पढ़ाई को पूरी करने हेतु पार्ट टाइम अध्यापक की और वकालत कर अपनी धर्म पत्नी रमाबाई के साथ जीवन निर्वाह किया। सन् 1919 में डॉक्टर अंबेडकर ने राजनीतिक सुधार हेतु गठित साउथबरो आयोग के समक्ष राजनीति में दलित प्रतिनिधित्व के पक्ष में साक्षी दी।

डी. लिट.की मानद उपाधियों से सम्मानित ---- बाबासाहेब डॉक्टर अंबेडकर को कोलंबिया विश्वविद्यालय ने एल. एल. डी. और उस्मानिया विश्वविद्यालय ने डी.लिट. की मानद उपाधियों से सम्मानित किया था। इस प्रकार डॉक्टर अंबेडकर वैश्विक युवाओं के लिए प्रेरणा बन गए क्योंकि उनके नाम के साथ बीए, एमए, एमएससी, पीएचडी, बैरिस्टर, डीएससी, डि.लिट. आदि कुल 26 उपाधियां जुड़ी है।

"शिक्षा वह शेरनी का दूध है, जो इसे पिएगा वो शेर की तरह दहाड़ेगा"।

योगदान

_____

सामाजिक व धार्मिक योगदान ---

मानवाधिकार जैसे दलितों एवं दलित आदिवासियों के मंदिर प्रवेश, पानी पीने, छुआछूत, जाति पति, ऊंच-नीच जैसी सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए मनुस्मृति २५ दिसम्बर १९२७ दहन (1927), महाड सत्याग्रह (वर्ष 1928), नासिक सत्याग्रह (1930), जैसे आंदोलन चलाएं।

बेजुबान शोषित और अशिक्षित लोगों को जगाने के लिए वर्ष 1927 से 1956 के दौरान मूक नायक, बहिष्कृत भारत, समता जनता और प्रबुद्ध भारत नामक 5 सप्ताहिक एवं पाक्षिक पत्र - पत्रिकाओं का संपादन किया।

संविधान तथा राष्ट्र निर्माण ---- उन्होंने समता, समानता, बंधुता एवं मानवता आधारित भारतीय संविधान को 2 वर्ष 11 महीने 18 दिन के परिश्रम से तैयार कर 26 नवंबर 1949 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को सौंप कर देश के समस्त नागरिकों को राष्ट्रीय एकता अखंडता और व्यक्ति की गरिमा की जीवन पद्धति से भारतीय संस्कृति को वशीभूत किया।

वर्ष 1951 में महिला सशक्तिकरण का हिंदू संहिता विधेयक पारित करवाने का प्रयास किया और पारित न होने पर स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दिया।

निर्वाचन आयोग, योजना आयोग, वित्त आयोग,, महिला पुरुष के लिए समान नागरिक, हिंदू संहिता, राज्य पुनर्गठन, बड़े आकार के राज्यों को छोटे आकार में संगठित करना, राज्य के नीति निर्देशक तत्व, मौलिक अधिकार, मानवाधिकार,नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, CAG निर्वाचन आयुक्त तथा राजनीतिक ढांचे को मजबूत बनाने वाली सशक्त, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं विदेश नीति बनाई।

प्रजातंत्र को मजबूती प्रदान करने के लिए राज्य के तीनों अंगों न्यायपालिका , कार्यपालिका एवं विधायिका को स्वतंत्र और पृथक बनाया तथा समान नागरिक अधिकार के अनुरूप एक व्यक्ति, एक मत और एक मूल्य के तत्व को स्थापित किया।

विधायिका, कार्यपालिका, एवं न्यायपालिका में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों की सहभागिता संविधान द्वारा सुनिश्चित की तथा भविष्य में किसी भी प्रकार की विधायिका जैसे ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत, जिला पंचायत, पंचायती राज इत्यादि में सहभागिता का मार्ग प्रशस्त किया।

मृत्यु ----- 24 मई 1956 को मुंबई में बुद्ध जयंती के अवसर पर उन्होंने यह घोषणा की कि वह अक्टूबर में बौद्ध धर्म अपना लेंगे 14 अक्टूबर 1956 को उन्होंने अपने कई अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म को गले लगा लिया

6 दिसंबर 1956 को बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर परलोक सिधार गए।

देश के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर को 31 मार्च 1990 को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

"शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो"।

Rinki Khare

M.A. English (Second Semester)

राष्ट्रीय सेवा योजना (National Service Scheme)

राष्ट्रीय सेवा योजना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व उद्देश्य
राष्ट्र की युवा शक्ति के व्यक्तित्व विकास हेतु युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित एक सक्रिय कार्यक्रम है। इसके गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज के हित के कार्य करते हैं। इसका प्रमुख उद्देश्य समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना है ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमारे देश के शिक्षाविदों ने यह महसूस किया कि गांव व समाज से बाहर जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों ने अपने समाज के लोगों से दूरियां बनाने लगे हैं। वे लोग समाज के बीच अपने को अलग समझने लगे हैं। जिसके कारण समाज में शिक्षित और अशिक्षित गांव और शहर के बीच एक नई दूरियां बनने लगी है। इस विषय पर देश के प्रमुख शिक्षाविदों के द्वारा विचार कर यह कहा गया कि क्यों ना उच्च शिक्षा के अंतर्गत एक ऐसा पाठ्यक्रम जोड़ दिया जाए जिससे समाज में उत्पन्न होने वाली इन दूरियों को मिटाया जा सके। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए सन 1950 में सर्वप्रथम शिक्षा आयोग ने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय सेवा के लिए भावना के आधार पर प्रवेश के लिए संस्तुति की। इसके साथ ही तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के सुझाव पर डॉक्टर सी. डी. देशमुख की अध्यक्षता में एक आयोग बनाया गया जिसका उद्देश्य छात्रों को स्नातक कक्षाओं में प्रवेश से पूर्व राष्ट्रीय सेवा अनिवार्य रूप से करनी थी। अप्रैल 1967 में विभिन्न राज्यों के शिक्षा मंत्रियों की बैठक में कहा गया की छात्रों को एक नवीन कार्यक्रम जो "राष्ट्रीय सेवा योजना" के नाम से बनाया गया था, में भाग ले सकते हैं।

इसके बारे में विस्तार से विचार कर योजना आयोग द्वारा चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय सेवा योजना को अनुदान दिया गया। तत्पश्चात सत्र 1969-1970 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा समस्त स्नातक कक्षाओं में राष्ट्रीय सेवा योजना को प्रारंभ किया गया । राष्ट्रीय सेवा योजना

की शुरुआत 37 विश्वविद्यालयों में 40000 विद्यार्थियों से हुई वर्तमान समय में पूरे देश में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की संख्या 32 लाख से ज्यादा है ।
आज राष्ट्रीय सेवा योजना का विस्तार सभी राज्य और देश के सभी विश्वविद्यालयों में हो गया है । छात्र/छात्राएं, अध्यापक, अभिभावक, सरकार, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और हायर सेकेंडरी विद्यालयों में काम करने वाले अधिकारी तथा सामान्य नागरिक अब राष्ट्रीय सेवा योजना की आवश्यकता और उसकी उपादेयता को समझने लगे हैं। युवा छात्रों में जीवन की वास्तविकता को समझने में जागरूकता आई है। वे जनता की कठिनाइयों को अच्छी तरह समझने लगे हैं, और उनका विश्लेषण करने लगे हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय सेवा योजना शिक्षा को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने में एक ठोस प्रयास है। राष्ट्रीय सेवा योजना की कई ईकाइयों ने अपने शानदार कार्य और अनुकरणीय आचरण से मिसाल कायम की है। जिससे समाज ने उन्हें आदर दिया है, और उन में अपना विश्वास व्यक्त किया है। राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों ने सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन में राष्ट्रीय स्तर पर मान्य लक्ष्यों जैसे भारतीयता में गर्व महसूस करना, स्वतंत्रता, समाजवाद, धर्म, निरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के अभियान में भी उपयोगी कार्य किया है।।

डॉ. एस आर महेन्द्र
कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय सेवा योजना

Interesting facts about English Literature

- **A language dies after every 14 days.**
- **The first novel ever written on a type writer was Tom Sawyer.**
- **“I am” is the shortest complete sentence in the English language.**
- **There are only four words in the English language which end in ‘dous’: tremendous, horrendous, stupendous and hazardous.**
- **Ghosts appear only in four Shakespearean plays: Julius Caesar, Richard III, Hamlet and Macbeth.**
- **John Milton used 8000 different words in his poem'Paradise Lost'.**
- **All of the roles in Shakespeare plays were originally acted by men and boys. In England at that time,it wasn't proper for females to appear on stage.**
- **The longest English word without a vowel—rhythm.**
- **“The mouse trap” by Agatha Christie is the longest running play in history.**
- **The only 15 letter word that can be spelt without repeating a letter is uncopyrightable.**

Mrs. Alka ShuklaAssistant professor
Department of English
Dr. Bhimrao Ambedkar Govt. College Pamgarh
Dist. Janjgir-Champa (CG)

मानव शरीर के बारे में कुछ आकर्षक तथ्य

1. शरीर का एकमात्र हिस्सा जिसकी कोई रक्त की आपूर्ति नहीं है, वह आंख का कॉर्निया है। यह हवा से सीधे ऑक्सीजन ग्रहण करता है।
2. मानव मस्तिष्क में एक मेमोरी क्षमता होती है जो हार्ड ड्राइव पर चार से अधिक टेराबाइट्स (1TB=1024GB)के बराबर होती है।
3. एक नवजात बच्चा सात महीने तक एक ही समय में सांस ले सकता है और निगल सकता है।
4. आपकी खोपड़ी 29 विभिन्न हड्डियों से बनी है।
5. मस्तिष्क से भेजे गए तंत्रिका आवेग 274 किमी / घंटा की गति से चलते हैं।
6. एक अकेला मानव मस्तिष्क संयुक्त दुनिया के सभी टेलीफोनों की तुलना में एक दिन में अधिक विद्युत आवेग उत्पन्न करता है।
7. औसत मानव शरीर में औसत कुत्ते पर सभी पिस्सू को मारने के लिए पर्याप्त सल्फर होता है, 900 पेंसिल बनाने के लिए पर्याप्त कार्बन, खिलौना तोप को आग लगाने के लिए पर्याप्त पोटेशियम, साबुन के सात बार बनाने के लिए पर्याप्त वसा और 50-लीटर बैरल भरने के लिए पर्याप्त पानी होता है|
8. मानव हृदय औसत जीवनकाल में 182 मिलियन लीटर रक्त पंप करता है
9. जब आप इस वाक्य को पढ़ रहे थे तब आपके शरीर में 50,000 कोशिकाएं मर गईं थीं और उनकी जगह नए कोशिकाओं ने ले ली थी।
10. मानव भ्रूण गर्भाधान के तीन महीने के भीतर उंगलियों के निशान प्राप्त करता है।
11. पुरुषों के मुकाबले महिलाओं का दिल तेजी से धड़कता है।
12. चार्ल्स ओसबोर्न नामक एक व्यक्ति ने कुल 68 वर्षों तक हिचकी खाए।
13. दाएं हाथ के लोग, बाएं हाथ के लोगों की तुलना में औसतन नौ साल अधिक जीवित रहते हैं।
14. औसत व्यक्ति अपने सपनों का 90% भूल जाता है।
15. मानव शरीर में सभी रक्त वाहिकाओं की कुल लंबाई लगभग 100,000 किमी है।
16. औसतन, किसी व्यक्ति की श्वसन दर शरद ऋतु की तुलना में वसंत में एक तिहाई अधिक होती है।

17. किसी व्यक्ति के जीवन के अंत तक, वे औसतन, लगभग 150 ट्रिलियन सूचनाओं को याद कर सकते हैं।
18. हम अपने शरीर की 80% गर्मी सिर से खो देते हैं।
19. जब आप शरमाते हैं, तो आपका पेट भी लाल हो जाता है।
20. प्यास की भावना तब होती है जब पानी की कमी आपके शरीर के वजन के 1% के बराबर होती है। 5% से अधिक का नुकसान बेहोशी का कारण बन सकता है, और 10% से अधिक निर्जलीकरण से मृत्यु का कारण बनता है।
21. मानव शरीर में कम से कम 700 एंजाइम सक्रिय हैं।
22. इंसान ही एकमात्र जीवित चीज है जो अपनी पीठ के बल सोता है।
23. औसत चार साल का बच्चा एक दिन में 450 सवाल पूछता है।
24. सिर्फ इंसान ही नहीं, बल्कि कोयल के भी अनूठे फिंगर प्रिंट होते हैं।
25. केवल 1% बैक्टीरिया के परिणामस्वरूप मानव शरीर बीमार हो सकता है।
26. पृथ्वी पर जीवित सभी लोगों को 1000 मीटर लंबे पक्षों के एक क्यूब में आराम से रखा जा सकता है।
27. बेली बटन का वैज्ञानिक नाम नाभि (umbilicus) है।
28. दांत मानव शरीर का एकमात्र हिस्सा हैं जो खुद को ठीक नहीं कर सकते हैं।
29. औसतन, एक व्यक्ति को सो जाने के लिए सात मिनट की आवश्यकता होती है।
30. दाएं हाथ के लोग अपने मुंह के दाईं ओर अपना अधिकांश भोजन चबाते हैं, जबकि बाएं हाथ के लोग बाईं ओर ऐसा करते हैं।
31. केवल 7% लोग बाएं हाथ के हैं।
32. सेब और केले की खुशबू किसी व्यक्ति को वजन कम करने में मदद कर सकती है।
33. यदि उनके पूरे जीवनकाल के लिए बढ़ने की अनुमति दी जाती है, तो किसी के बालों की लंबाई लगभग 725 किलोमीटर होगी।
34. उन सभी लोगों में से जो अपने कानों को हिला सकते हैं, उनमें से केवल एक तिहाई केवल एक कान को हिलाने में सक्षम हैं।
35. अपने जीवनकाल के दौरान, एक व्यक्ति औसतन गलती से आठ छोटे मकड़ियों को निगल जाएगा।

36. मानव शरीर में बैक्टीरिया का कुल वजन 2 किलो है।

37. मानव शरीर में मौजूद 99% कैल्शियम किसी के दांत में होता है।

38. मानव होंठ किसी व्यक्ति की उंगलियों के सिरे की तुलना में सैकड़ों गुना अधिक संवेदनशील होते हैं।

39. आपके जबड़े के एक तरफ की मांसपेशियों की कुल ताकत 195 किलोग्राम के बराबर होती है।

40. एक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को चुंबन द्वारा बैक्टीरिया के 278 विभिन्न प्रकार प्रदान है,सौभाग्य से,उनमें से 95% हानिकारक नहीं हैं।

41. पार्थेनोफोबिया कुंवारी लड़कियों का डर है।

42. यदि आप मानव शरीर में निहित सभी लोहे को इकट्ठा करते हैं, तो आपको बस एक छोटा टुकड़ा मिलेगा, जो केवल आपकी घड़ी में उपयोग के लिए पर्याप्त है।

43. 100 से अधिक विभिन्न वायरस हैं जो फ्लू का कारण बनते हैं।

44. मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो सीधी रेखाएँ खींच सकता है।

45. किसी व्यक्ति के जीवनकाल में लगभग 1,000 बार पूरी तरह से मानव त्वचा को बदल दिया जाता है।

46. एक व्यक्ति जो एक दिन में एक पैकेट सिगरेट पीता है, वह साल में आधा कप टार पीने के बराबर कर रहा है।

47. महिलाएं पुरुषों की तुलना में लगभग दो गुना कम झपकी लेती हैं।

48. मानव शरीर की संरचना में केवल चार खनिज होते हैं: एपेटाइट, अर्गोनाइट, कैल्साइट और क्रिस्टोबलाइट।

49. पुरुषों को आधिकारिक तौर पर बौनों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है यदि उनकी ऊंचाई 1.3 मीटर से कम है, जबकि महिलाओं के लिए माप 1.2 मीटर है।

50. Fingernail आपके toe nails की तुलना में लगभग चार गुना तेजी से बढ़ता है।

Dr. Santosh Kr. Agrawal
Asst. Prof. (Zoology)
Dr. Bhimrao Ambedkar Govt. College Pamgarh (C.G.)

मैं उसकी राधा और मीरा

बरसों बीत गए सुन - सुन के ।
मीरा रही थी एक दीवानी ।
समझ नहीं पाती थी जिसको ।
ऐसी थी अनबुझी कहानी ।

जिसका प्रेम अधूरा हो वह कैसे ।
कहलाए सबसे बड़ी दीवानी ।
अब तक थी अनजान ।
नहीं था उसके 'प्रेम' का ज्ञान ।

सोचा करती थी अक्सर ।
कैसे मीरा हुई बावरी उस पर ।
जिसे कहते हैं सब भगवान ।
जिसने ना रखा कभी भी प्रेम का मान ।
राधा , मीरा को कृष्ण पर और । कृष्ण को था न जाने किस प्रेम पर अभिमान ।
100 रानियां संग रही थी फिर भी ।
ना घटा था उनका 'राधा, मीरा' का मान ।
अब लगता है कृष्ण की मजबूरी का ।
ज्ञान हमें भी हो रहा है ।
राधा और मीरा के निस्वार्थ प्रेम का ।
अभिमान हमें भी हो रहा है । शायद अपने सपनों से ।
प्यार हमें भी हो रहा है ।
राधा बंधी जिस कसम से ।
मीरा बंधी जिस रसम से ।
उनकी उस विवशता के सानिध्य का ।
साक्षात्कार हमें भी हो रहा है ।
इस दुनिया से उस दुनिया तक, ले जाए ऐसा लक्ष्य हमारा है ।
ना राधा सा, ना कृष्ण सा, ना मीरा सा ।
ना आधा, ना पूरा सा ।
सृष्टि के 10 रस से परे ।

हमारा प्रेम सबसे प्यारा है ।
ना राधा सा त्याग है मुझमें ।
ना मीरा सा समर्पण जीवन मेरा ।ना ही कृष्ण सा लीला जानू ।
ना ऊंचा पहचान और ना ही महान काम है मेरा ।
फिर भी मैं इतना जानू सपना ही है जान हमारा ।
सपना ही है अभिमान हमारा ।
सपना पर जीवन समर्पण ।
सपना ही है प्राण हमारा ।
सपनों के लिए त्याग तपस्या ।
सपना ही कृष्ण और मैं उसकी राधा और मीरा ।

Satwantin Wani

M. A. Politcal Science(4th Semester)

करुणा

करुणा एक ऐसी कहानी है जो एक बड़ी बहन का अपने छोटे भाई के प्रति त्याग, समर्पण और प्रेम का भाव उजागर करती है और यह कहानी बताती है कि हमारे समाज में ऐसे बालक भी हैं जो हम जैसे नहीं हैं समाज उन्हें हीन भावना से देखता है जबकि असल में साथ तो उन बालकों को चाहिए। एक बड़ी बहन करुणा की कहानी समाज को दया और करुणा का संदेश देती है

करुणा अपने परिवार के साथ बहुत छोटे से कस्बे में रहती थी। परिवार में माता-पिता , दादा दादी और एक छोटी बहन थी। करुणा एक बहुत ही समझदार और सच्ची लड़की थी उसे त्योहार बहुत ही भाते थे। उसका सबसे प्रिय त्योहार रक्षाबंधन था परंतु उसका कोई भाई नहीं था इसलिए अपने भाई की कमी हमेशा उसे खलती थी। वह अभी कक्षा 4 में थी। इस बार के रक्षाबंधन के त्योहार में वह बहुत ही खुश थी क्योंकि कुछ ही माह पूर्व उसके भाई का जन्म हुआ था। करुणा और उसकी बहन ने इस बार की राखी की बहुत सी तैयारियां की। करुणा अपनी बहन के साथ बाजार जा कर बहुत ही सुंदर सुंदर राखियां खरीद लाई और रक्षाबंधन के दिन अपने भाई को तिलक लगाकर राखी बांधा और बड़े ही धूमधाम से रक्षाबंधन का त्योहार मनाया। समय यूं ही खुशी खुशी व्यतीत हो रहा था। लेकिन परिवार में एक चिंता का विषय था कि करुणा के भाई के साथ कुछ समस्या है वह बाकी बच्चों की तरह सामान्य नहीं है वह ना तो परिवार जनों के साथ किसी भी बात के दौरान नजरें मिलाता। और वह हर कार्य जो एक सामान्य बच्चा बहुत ही आसानी से कर लेता है वह करुणा का भाई नहीं कर पाता था वह हर कार्य के लिए अपने परिवार पर ही निर्भर था वह दैनिक दिनचर्या के कार्य भी नहीं कर पाता था।बहुत से चिकित्सकों को दिखाने के पश्चात उन्हें एक मनोचिकित्सक के बारे में पता चला विभिन्न परीक्षण के पश्चात यह पता चला कि करुणा के भाई को ऑटिज्म है। ऑटिज्म के साथ-साथ उसे हाइपरएक्टिविटी की भी समस्या थी जिससे कि चीजों को तोड़ना फोड़ना उसके लिए आम बात थी उसे बहुत ज्यादा गुस्सा भी आता था। आसपास के लोगों को यह पागलपन लगता था हर किसी को यह समझाया जाना संभव भी नहीं था कि यह एक मानसिक समस्या है यह किसी भी बालक को हो सकता है। यह उसके और उसके परिवार के लिए बहुत ही बड़ा आघात था। करुणा के माता-पिता को हमेशा उनके बालक की चिंता लगी रहती थी, कि उनके बाद उनके बच्चे का क्या होगा। हालांकि करुणा और उसके माता-पिता यह समझते थे कि करुणा के भाई को अगर सही मार्गदर्शन मिले तो उसमें कुछ हद तक सुधार हो सकता है। वह मानसिक रोगी नहीं है वह बस हमसे थोड़ा अलग है उसे जीवन जीने के लिए हमारी सहायता की आवश्यकता है । करुणा हर वक्त इस बारे में सोचती रहती उसने मन में ठान लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए वह अपने भाई का साथ तो छोड़ेगी नहीं यह सारी समस्याएं उसे बहुत सताती थी लेकिन उसने मन में सोचा कि

जिस तरह हर रक्षाबंधन में एक भाई अपनी बहन को रक्षा का वचन देता है ठीक उसी प्रकार से एक बड़ी बहन भी अपने भाई का साथ दे सकती है उसकी रक्षा कर सकती है। जीवन की हर परिस्थिति में उसके साथ खड़े रह सकती है। उसने सोचा बार-बार चिंता करने से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। अगर ऑटिस्टिक बच्चों को समझाया जाए, पढ़ाया जाए, तो उनमें कुछ बदलाव हो सकता है । बहुत प्रयास करने पर भी करुणा के भाई में कुछ खास परिवर्तन दिखाई नहीं पड़ता था। लेकिन बहुत प्रयास करने के बाद वह कुछ कुछ चीजें समझ जाता था और सीख लेता था। यह देख कर उसे बहुत ही खुशी होती थी। करुणा ने सोचा की उसे स्वयं को सफल बनाना होगा ताकि वह जीवन की प्रत्येक परिस्थितियों में अपने भाई और अपने माता-पिता के साथ खड़ी रहे। इसके लिए उसे अपने पैरों पर खड़ा होना बहुत ही आवश्यक था। वह स्वयं भी पड़ती और अपने भाई का ध्यान रखने में अपने माता-पिता का पूर्ण सहयोग किया करती थी। वह सोचती की ना जाने विश्व में ऐसे कितने बच्चे होंगे लेकिन अपने परिवार के प्रयासों से वह भी अपना जीवन जी लेते हैं। उन्हें आवश्यकता है तो सिर्फ साथ की अगर उनका सही तरीके से ख्याल रखा जाए, ध्यान रखा जाए, सिखाया पढ़ाया जाए तो उनमें भी परिवर्तन हो सकते हैं। समय बीत रहा था। करुणा अब कक्षा 10वीं में थी करुणा का भाई अब 8 साल का हो चुका था लेकिन ऑटिस्टिक होने के कारण से वह सामान्य बच्चों के स्कूल में नहीं जा पाता था। ऑटिज्म की समस्या के कारण उसे दिन रात निगरानी की आवश्यकता थी उसे एक भी पल अकेला नहीं छोड़ा जा सकता था ऐसे माहौल में करुणा और उसकी बहन को पढ़ाई करने में अनेक दिक्कतें आती थी वह पूरे ध्यान से पढ़ाई नहीं कर पाती थी लेकिन वह परिस्थितियों को समझती थी वह इस बात का पूरा ध्यान रखती थी की उसके और उसकी बहन के पढ़ाई में किसी भी तरह की कोई व्यवधान ना पड़े। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी करने लगी थी उसने अपना एक निश्चित समय सारणी बनाया और वह उसी समय सारणी के अनुरूप तैयारियां करने लगी थी जिससे वह सही तरीके से अध्ययन कार्य कर सकें। करुणा पढ़ने में बहुत अच्छी थी इसलिए वह हर विषय को बहुत जल्दी समझ लेती थी लेकिन अपनी घबराहट व डर की वजह से कई प्रश्नों के उत्तर गलत कर देती थी जिसकी वजह से वह बहुत निराश हो जाती थी और प्रारंभ में उसने कई प्रतियोगी परीक्षाएं दिलाई लेकिन वह सफल नहीं हो पाई। यह सब देख कर उसके हिम्मत जवाब देने लगती थी लेकिन वह यह सोचती की उसके सफल होने के पीछे केवल उसकी तरक्की नहीं है बल्कि उसकी सफलता के पीछे उसके भाई का भविष्य टिका हुआ है यह सोच कर उसने दुगने जोश के साथ वापस से परीक्षा की तैयारी में जुट गई अपने मन में डर और घबराहट के स्थान में अपने परिवार के लिए प्रेम को बसाया और उसने पूरे जोश के साथ दिन रात मेहनत की और मात्र 22 वर्ष की उम्र में उसने एक बहुत ही अच्छे सरकारी अफसर के पद पर पदस्थ हुई और समाज में अपने माता पिता का नाम ऊंचा किया। आखिर उसकी मेहनत रंग लाई। करुणा की पोस्टिंग उसके शहर से थोड़ी दूर हुई थी इसलिए वह अपनी नौकरी वहीं रहकर किया करती थी जिससे कि वह अपने भाई और अपने माता-पिता

से थोड़ी दूर हो गई थी। उसे ऐसा लगने लगा था कि कहीं वह अपनी परिवारिक जिम्मेदारियों से दूर तो नहीं भाग रही है लेकिन कुछ ही माह के बाद उसकी पोस्टिंग उसके शहर में ही हो गई जिससे वह बहुत ही खुश थी। अब वह अपने शहर में ही रह कर अपने माता-पिता और अपने भाई का ध्यान रख सकती थी यह सोचकर वह बहुत ही खुश थी। अपनी मेहनत के दम पर उसने दिन प्रतिदिन नए सफलता के कदम चूमे और उन्नति के शिखर पर बढ़ती रही वह चाहे कितनी भी ऊंची आसमान में क्यों ना उड़े उसने अपने पैर सदैव जमीन में ही टिका रखें और अपने नौकरी और भाई इन दोनों की जिम्मेदारियां बखूबी निभाई। आज जब वह यह सब सोचती है तो उसकी आंखों में एक अलग ही चमक आ जाती है इसलिए नहीं कि आज वह कैसे पद पर है जिसे पाने के लिए लाखों लोग सपने सजाए बैठे हैं बल्कि इसलिए कि उसने अपने माता-पिता और अपने भाई के प्रति अपने फर्ज को पूर्ण किया हैं। जब अपने माता-पिता की आंखों में अपने लिए गर्व देखती है, यह देख करुणा की आंखें खुशी से छल छला उठे।

Shalu Agrawal
B .Sc. Part II (Bio)

ज्योतिबा फुले की जीवनी

आरंभिक जीवन ----- ज्योतिबा फुले का पूरा नाम महात्मा जोतिराव गोविंदराव फुले है। उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र में हुआ था। उनका परिवार बेहद गरीब था और जीवन यापन के लिए बाग बगीचों में माली का काम करता था। उनके पिता का नाम गोविंदराव फुले और माता का नाम विमला बाई फुले था। ज्योतिबा जब मात्र 1 वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन-पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। 7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेदभाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही।

सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की ज्योतिबा आस पड़ोस के बुजुर्गों से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्कसंगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे।

ज्योतिबा फुले जी मैट्रिक पास थे। और उनके घरवाले चाहते थे कि वह अच्छे वेतन पर सरकारी कर्मचारी बन जाए लेकिन ज्योतिबा ने अपना सारा जीवन दलितों की सेवा में बिताने का निश्चय किया था।

कार्य और समाज सुधार ----

(1) ज्योतिबा फुले का सबसे पहला और महत्वपूर्ण कार्य महिलाओं की शिक्षा के लिए था। इन्होंने 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए भारत की पहली प्रशाला खोली। 24 सितंबर 1873 को उन्होंने "सत्यशोधक समाज" की स्थापना की। और उनकी पहली अनुयायी खुद उनकी पत्नी थी, जो हमेशा अपने सपनों को बांटती थी तथा पूरे जीवन भर उनका साथ दिया।

(2) 1851 में इन्होंने बडा और बेहतर स्कूल शुरू किया जो बहुत प्रसिद्ध हुआ। वहां जाति, धर्म तथा पंथ के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था,और उसके दरवाजे सबके लिए खुले थे।

(3) ज्योतिबा फुले बाल विवाह के खिलाफ थे साथ ही विधवा विवाह के समर्थक भी थे।

(4) दलितों और निर्बल वर्ग को न्याय दिलाने के लिए ज्योतिबा ने "सत्यशोधक समाज" की स्थापना की। उनकी समाज सेवा देखकर 1888 में मुंबई की एक विशाल सभा में उन्हें "महात्मा" की उपाधि दी गई।

ज्योतिबा ने ब्राम्हण पुरोहित के बिना ही विवाह संस्कार आरंभ कराया और इसे मुंबई हाई कोर्ट से भी मान्यता मिली। वह बाल विवाह विरोधी और विधवा विवाह के समर्थक थे। व लोकमान्य के प्रशंसकों में थे।

(5) उन्होंने विधवाओं और महिला कल्याण के लिए काफी काम किया था। उन्होंने किसानों के हालात सुधारने और उनके कल्याण के भी काफी प्रयास किए थे। स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए ज्योतिबा और उनकी पत्नी ने मिलकर 1848 में स्कूल खोला जो देश का पहला महिला विद्यालय था। उस दौर में लड़कियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को पढ़ाना शुरू कर दिया और उनको इतना योग्य बनाया कि वे स्कूल में बच्चों को पढ़ा सकें ।

ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले की कोई संतान नहीं थी। इसलिए उन्होंने एक विधवा के बच्चे को गोद लिया था। यह बच्चा बड़ा होकर एक डॉक्टर बना और इसने भी अपने माता-पिता के समाज सेवा के कार्य को आगे बढ़ाया।

मृत्यु --- 8 जुलाई 1988 में ज्योतिबा जी को लकवा का अटैक आ गया जिसकी वजह से उनका शरीर कमजोर होता जा रहा था लेकिन उनका जोश और मन कभी कमजोर नहीं हुआ था।

28 नवंबर 1890 को ज्योतिबा फुले ने देह त्याग दिया और एक महान समाजसेवी इस दुनिया से विदा हो गया।

"विद्या बिना गई मती,
मती बिन गई गति,
गति बिन गई नीति,
नीति बिन गया वित्त।
वित्त बिन चरमराये शूद्रा,
एक अविद्या ने किये कितने अनर्थ"।।

Rinki Khare
M.A. English (Second Sem.)

पहली कविता

मेरे आंखों में एक सपना है l
कहो तो सुनाऊं आपको ll
उढ़ू आसमां में पंख लगा कर जैसे कोई परी I
चाहत है इतनी सी चलूं इस तरह से जैसे हवा में कोई मधुर गीत l
गाऊं इस तरह की प्रकृति झूम उठे l
नाचू इस तरह की बारिश कदमों को चुम उठे l
हंसी वह इतनी प्यारी की कलियां खिल जाए l
रेगिस्तान में भी भंवरा गुनगुनाए l
जमीं से आसमां तक हो मेरा आना जाना l
चांद सितारे क्या है सूरज को भी है गले लगाना I
ज्यादा नहीं अफसरों के साथ है फोटोशूट कराना l
प्रकृति को परिवर्तन कर नया समय है लाना I
रात तारों की गिनती करूं सूरज के संग l
चांद के साथ सूरज की देखूं पहली किरण I
सूरज के साथ बारिश में भीगाऊं चांद को I
कहने को तो बहुत कुछ है छोटी सी कविता में क्या क्या बताऊं आपको I
मेरी आंखों में एक सपना है कहो तो सुनाऊं आपको l

Satwantin Wani
M. A. Politcal Science (4th Semester)

संत गुरु घासीदास बाबा की जीवनी व शिक्षाएं

प्रारंभिक जीवन --- बाबा गुरुघासीदास का जन्म ग्राम गिरौदपुरी तहसील बलौदाबाजार जिला रायपुर में 18 दिसंबर की पूर्णिमा की रात्रि में 4:00 बजे की पवित्र बेला में सन 1756 को हुआ था। उनके पिता का नाम महंगू दास और माता का नाम अमरौतीन था, और उनकी पत्नी का नाम सफूरा देवी था, जो सिरपुर अंजोरी गांव की निवासी थी।

गुरु घासीदास जी सतनामी धर्म जिसे आम बोल - चाल में सतनामी समाज कहा जाता है, के प्रवर्तक हैं।

बाल्यकाल से ही गुरु घासीदास के हृदय में वैराग्य का भाव प्रस्फुटित हो चुका था। समाज में व्याप्त पशु बलि तथा अन्य कुप्रथाओं का ये बचपन से ही विरोध करते रहें। समाज को नई दिशा प्रदान करने में इन्होंने अतुलनीय योगदान दिया था। सत्य से साक्षात्कार करना ही गुरु घासीदास के जीवन का परम लक्ष्य था।

गुरु घासीदास का जन्म ऐसे समय में हुआ था, जब समाज में छुआछूत, ऊंच-नीच, झूठ - कपट का बोलबाला था। बाबा ने ऐसे समाज में समाज को एकता, भाईचारे तथा समरसता का संदेश दिया।

गुरु घासीदास की शिक्षाएं --- संत गुरु घासीदास जी को ज्ञान की प्राप्ति छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिला के सारंगढ़ तहसील में बिलासपुर रोड(वर्तमान में) में स्थित एक पेड़ के नीचे तपस्या करते वक्त प्राप्त हुआ, ऐसा माना जाता है, जहां आज गुरु घासीदास पुष्प वाटिका की स्थापना की गई है।

गुरु घासीदास बाबा ने समाज में व्याप्त जातिगत विषमताओं को नकारा। उन्होंने ब्राह्मणों के प्रभुत्व को नकारा और कई वर्णों में बांटने वाली जाति व्यवस्था का विरोध किया। उनका मानना था कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक रुप से समान हैसियत रखता है। गुरु घासीदास ने मूर्तियों की पूजा को वर्जित किया। वे मानते थे कि उच्च वर्ण के लोगों और मूर्ति पूजा में गहरा संबंध है।

गुरु घासीदास पशुओं से भी प्रेम करने की सीख देते थे। वे उन पर क्रूरता पूर्वक व्यवहार करने के खिलाफ थे। सतनाम पंथ के अनुसार खेती के लिए गायों का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। गुरु घासीदास के संदेशों का समाज के पिछड़े समुदाय में गहरा असर पड़ा। गुरु घासीदास के संदेशों और उनकी जीवनी का प्रसार पंथी गीत व नृत्यों के जरिए भी व्यापक रूप से हुआ।

कुछ मत के अनुसार बाबा गुरु घासीदास गांव वालों के साथ तीर्थ दर्शन करने जगन्नाथपुरी जा रहे थे। रास्ते में उनकी मुलाकात कबीर पंथ के रैदास के शिष्य

जगजीवनदास से हुई और वहीं उनसे प्रभावित होकर वे अपने गांव वालों व परिवार को छोड़कर आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए सोनाखान के जंगल में स्थित छाता पहाड़ के नीचे तप कर आत्म ज्ञान प्राप्त कर अवरा - धवरा पेड़ के नीचे शिष्य अनुयायियों को ज्ञान देने लगे। लेकिन समाज में व्याप्त बुराइयों के कारण लोग उनकी निंदा करते थे। समाज में व्याप्त कुरीतियों पीड़ादायक व्यवस्था विरोध में लोगों को जागरुक करने के कारण उन्हें क्षेत्र से बाहर कर दिया गया और वह गिरौदपुरी छोड़कर सहपरिवार भंडारपुरी आ गए जहां उन्हें विधवा लोहारिन के घर पर आश्रय मिला और वे सतनाम का प्रचार करते रहे।
सात उपदेश -----

(1) सतनाम पर विश्वास एवं सत्य की राह पर चलना

(2) जीव हत्या नहीं करना, बली और मांसाहार का विरोध

(3) चोरी जुआ से दूर रहना

(4) जाति - पाति के प्रपंच में नहीं रहना

(5) स्त्रियों का सम्मान करना

(6) जानवरों पर अत्याचार नहीं करना

(7) नशा सेवन नहीं करना व व्यभिचार नहीं करना।

घासीदास बाबा ने 20 फरवरी 1850 को देह त्याग दिया । गुरु घासीदास के पुत्रों ने उनके उपदेशों का प्रचार निरंतर रखा। गुरु के अनुयायी उन्हें अवतारी और अमर मानते थे।

सफेद ध्वज के चयन ---- सतनाम धर्म के प्रतीक के लिए सफेद ध्वज का चयन समाज के द्वारा किया गया,जो सत्य को प्रदर्शित करता है। सत्य पर प्रतीकात्मक जोड़ा जैतखाम में सफेद ध्वज चढ़ाया जाता है।

सत्य पर अडिग विचार को आसमान की ऊंचाइयों पर बुलंद करने के लिए गिरौदपुरी में 77 मीटर (243फीट) ऊंचा जैतखाम बनाया गया है जो बहुत ही भव्य और मनोरम है।

"सत्य ही मानव का आभूषण है"

Life

Life is a

BOOK
Every day is a new

PAGE
Every month is a new

CHAPTER
AND
Every year is a new

SERIES ..

SUNITA RATRE
B.Sc. Final year

यूँ ही नही मिलती राही को मंजिल ,
एक जुनून सा दिल मे जागाना होता है !
पूछा किसी ने चिड़िया से ,
कि कैसे बना आशियाना ?
चिड़िया बोली
भरनी पड़ती है उड़ान बार बार ,
तिनका- तिनका उठाना होता है।

Nirmal sahu
B.com 1st year

यूं ही नहीं मिलता किनारा नदी को, कई चट्टानों से टकराना पड़ता है,।। कभी अपनों से, कभी गैरों से, कभी स्वयं से लड़ना पड़ता है, जीतता तो वहीं हैं,,जो आगे बढ़ते चलता है,, आगे बढ़ते चलता है।।

Sarita Khare
B.com.1st year

COLLEGE का पल

COLLEGE का पल था,
बहुत ही अनमोल था,
जिसके बाद ही सभी को मिलता गोल था।
COLLEGE का हसीन हर पल था,
जहां सीख व मार्गदर्शन भरपूर था!
जहां हमेशा होता हलचल था,
COLLEGE का वह बेहतरीन पल था!
जहां विद्वानों की टोलियाँ थी,
जो बोलते मीठे बोलियाँ थी।
जिनके मार्गदर्शन से छात्राएँ होते सक्षम थे.,
वहा अनुज, महेश, प्रवीण, सत्येन्द्रपाल और आकाश जाते हरदम थे!
जहां BOTANY मैम के साथ PRECTICAL होती BEST थी,
वहा ENGLISH मैम संस्कारों के लिए करवाती INVEST थी,
जहां ZOOLOGY सर जी मस्त थे,
वहा CHEMICAL सर जी ज़बर्दस्त थे!
N.S.S की बात जब आती थी,
चारो तरफ खुशियाँ छा जाती थी।
मिल जाए काश ओ पल,
जब आकाश दोस्तों को कह सके,
ओ साथी! मेरे साथ COLLEGE चल!!!

बहुत ही बढ़िया , बहुत ही सुंदर,
COLLEGE का वह पल था, बहुत ही अनमोल था!

AAKASH NARANGE
B.Sc. Final Year

"छत्तीसगढ़ के लोकगीत"

मया के गीत मोर "करमाददरिया",
सत संदेशा "पंथी" ह बताय।
ताक धिनाधिन मांदर बाजे,
मन मंज़ूर मोर झूमर जाय।।
गीत "गौरा गौरी" "सुआ" ह,
मोर माटी के सोंध महकाय।
"राउत नाचा" ह निशान बाजा म,
दिन देवारी म मन ल मोहाय।।
गीत "भड़ोनी" अउ बिहाव के,
बिहतरा घर म रंग जमाय।
माता सेवा के "जस गीत" म,
कतको झन माता चढ़ जाय।।
फागुन महीना "गीत फाग" संग,
मन में मया के रंग घोराय।
"पंडवानी" तो जग जाहिर हे,
देश विदेश म मान बढ़ाय।।
छट्ठी छेवारी म "सोहर गीत",
नान्हे लईका आशीस पाय।
"बांस गीत" मोर भुनरय भनभन,
"गीत देवार" चिकारा बजाय।।
"गीत चंदैनी" प्रेम के चिनहा,
लोरिक चंदा के मया बताय।
लोकगीत मोर छत्तीसगढ़ के,
भीतर ले हिरदय छू जाय।।

संकलनकर्ता
निशी धीवर
एम. ए.
द्वितीय सेमेस्टर
(राजनीति विज्ञान)

अनमोल वचन

तारीफ और सच्ची प्रशंसा से बात शुरू करो।
लोगों की गलतियां सीधे तरीके से ना बताएं।
किसी की आलोचना करने से पहले अपनी गलतियां बताएं।
सीधे आदेश देने के बजाय प्रश्न अवश्य पूछें।
थोड़ी सी सुधार की भी तारीफ करें और हर सुधार पर तारीफ करें।
प्रोत्साहित करें। यह बताएं कि गलती सुधारना आसान है।
सामने वाले व्यक्ति को कोई काम इस तरह साफ है कि वह आपका कहां काम खुशी-खुशी कर दें।
सामने वाले व्यक्ति के विचारों और इच्छाओं के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करें।
याद रखें किसी व्यक्ति का नाम उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण और मधुरता शब्द होता है।
अच्छे श्रोता बने, दूसरों को खुद के बारे में बातें करने के लिए प्रोत्साहित करें।
बुराई मत करो, निंदा मत करो, शिकायत मत करो।

- अजीत कुमार (एम. ए)
सेकंड सेमेस्टर
पॉलिटिकल साइंस

Art Gallery : Mehendi

Designs

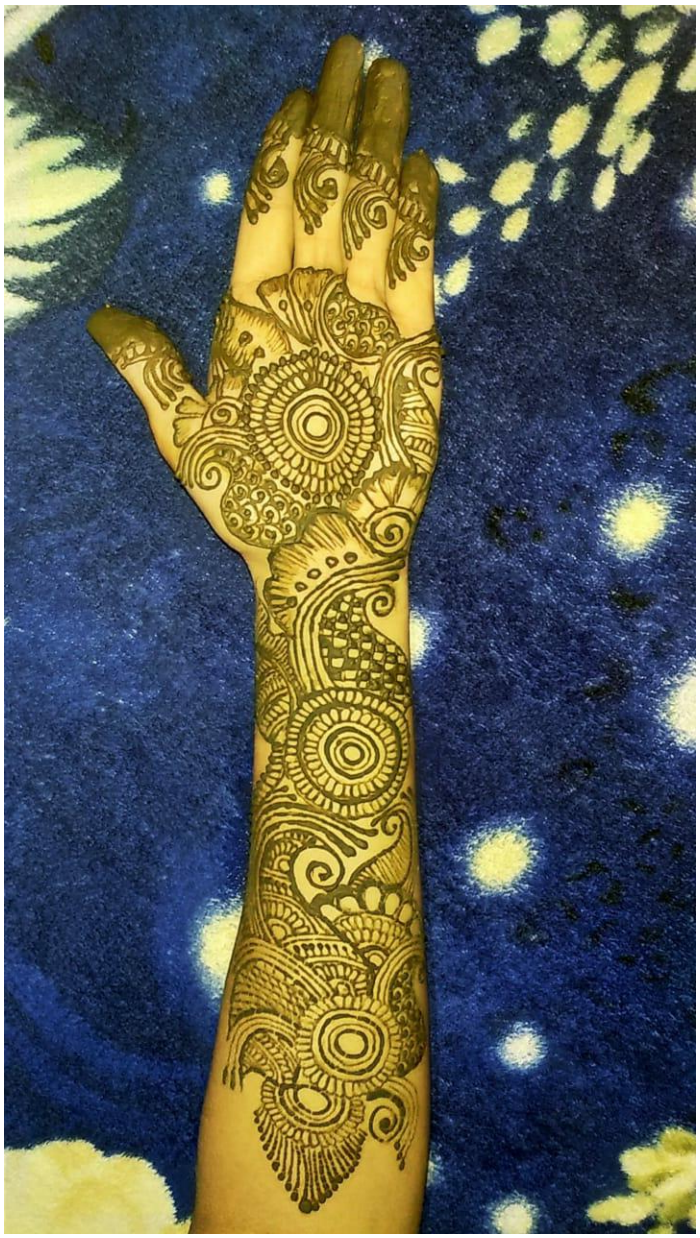

Priyanka Khare

B. Sc. I MATHS

Vibha Tiwari

M. A. 2ND SEMESTER ENGLISH

Damini Jangde
M.A.(English) 2nd sem

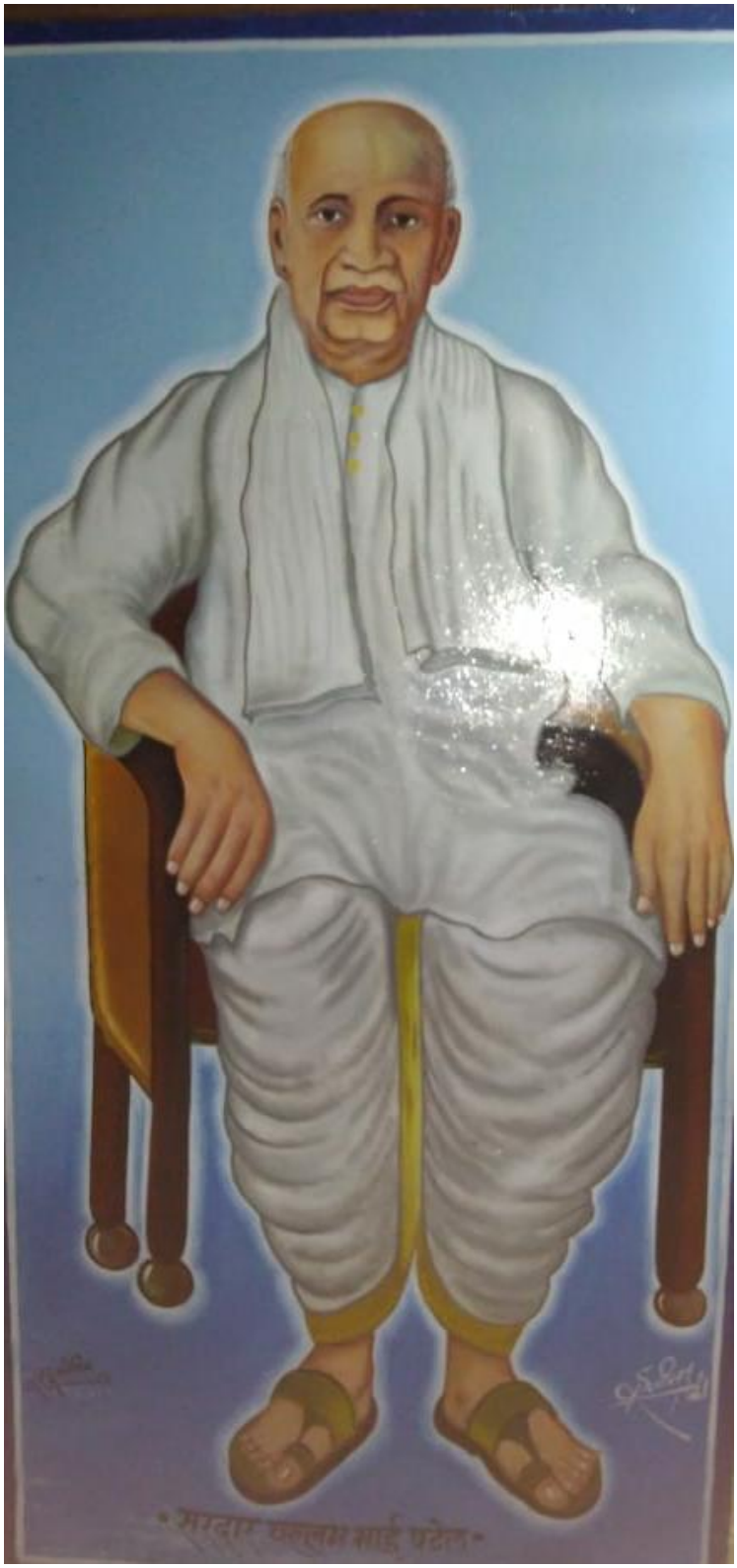

Painting and Murals

Anchal Singh Bhardwaj
B.A. II

Anchal Singh Bhardwaj

B.A. II

Anchal Singh Bhardwaj

B.A. II

Anchal Singh Bhardwaj

B.A. II

The Human Heart

KEYA BISWAS

B. Sc. I BIO

Silence is the best option for all situations and all problems

KAJAL NIRALA

B. Sc. I BIO

Yogpriya Joshi

B. Sc. Part III

SHEORINARAYAN

INTRODUCTION : "SHEORINARAYAN" town is located in "CHHATISGARH" States "JANGIR-CHAMPA" district in our India."SHEORINARAYAN" also know as a "SHABARINARAYAN" by this areas local people's.

LOCATION DEFINE :-

* GEOGRAPHICAL IMPORTANCE: SHEORINARAYAN is a fabulous geographical and environment. SHEORINARAYAN located near by bank of "MAHANADI". SHEORINARAYAN is located at 21°73°N 82°58°E. It's average elevation is 235m. SHEORINARAYAN Town is the "NAGAR-PANCHAYAT" Of jangir champa district. It have a wonderful park .It have a wonderful & joyful enivorment in the suitable climate. SHEORINARAYAN is very good area for fresh our mind by energatic enivorment and fresh air . This climate fully relief our stress & fresh our mind. *MYTHS IMPORTANT:- SHEORINARAYAN is famous for there holy faith. 2500 years old temples is situated in SHEORINARAYAN. The myths tell about SHEORINARAYAN that "IN THE VEDIC PERIOD" when the Lord RAM with his wife sita and his younger brother Lakshman started there exile in bastar area of chhatisgarh. They lived more then 10 years of their 14 years of vanvas in different places of chhatisgarh. SHEORINARAYAN was named after an old lady Shabari. When Ram visited Shabari she said" I do not anything offer other than my heart.but were are some berry fruits. May it please you, My lord ", saying so , shabari offered the fruits she had meticulously collected to Rama. When Rama was tasting then Lakshmana raised the concern that shabari had already tasted them and therefore unworthy of eating. To this Rama said that of the many types of fruits he tasted " nothing could equal this berry fruits, offered with such devotion you tasted them then alone will you know.whomsoever some fruits,leafs, Flowers or some water with love. I partake with joyful. 3. FAMOUS THING'S:- SHEORINARAYAN is famous

for there temples & there "MANGI PURANIMA" fair . This fair is happened in Occasion of "MANGI PURANIMA" time period. In this period lots of things is lived in this area & the temples aren't also decorated in this time period. This time period every things lived there own IMPORTANCE with the believe & faith.

. Conclusion:- This area is fully enjyfull and holy faith area .This area teach us the importance of Faith & Devotion

VAISHALI AHEER

B.A. I

शिवरीनारायण:दर्शनीय स्थल

शिवरी नारायण महानदी, शिवनाथ और जोंक नदी के त्रिधारा संगम के तट पर स्थित प्राचीन, प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण और छत्तीसगढ़ की जगन्नाथपुरी`` के नाम से विख्यात कस्बा है। यह छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा जिला के अन्तर्गत आता है। यह बिलासपुर से ६४ कि. मी., राजधानी रायपुर से बलौदाबाजार से होकर १२० कि. मी., जांजगीर जिला मुख्यालय से 45 कि. मी., कोरबा जिला मुख्यालय से ११० कि. मी. और रायगढ़ जिला मुख्यालय से सारंगढ़ होकर ११० कि. मी. की दूरी पर अवस्थित है।

अप्रतिम सौंदर्य और चतुर्भुजी विष्णु की मूर्तियों की अधिकता के कारण स्कंद पुराण में इसे श्री पुरूषोत्तम और श्री नारायण क्षेत्र कहा गया है। हर युग में इस नगर का अस्तित्व रहा है और सतयुग में बैकुंठपुर, त्रेतायुग में रामपुर और द्वापरयुग में विष्णुपुरी तथा नारायणपुर के नाम से विख्यात यह नगर मतंग ऋषि का गुरूकुल आश्रम और शबरी की साधना स्थली भी रहा है। भगवान श्रीराम और लक्ष्मण शबरी के जूठे बेर यहीं खाये थे और उन्हें मोक्ष प्रदान करके इस घनघोर दंडकारण्य वन में आर्य संस्कृति के बीज प्रस्फुटित किये थे। शबरी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए 'शबरी-नारायण` नगर बसा है। भगवान श्रीराम का नारायणी रूप आज भी यहां गुप्त रूप से विराजमान हैं। कदाचित् इसी कारण इसे गुप्त तीर्थधाम`` कहा गया है। याज्ञवलक्य संहिता और रामावतार चरित्र में इसका उल्लेख है। भगवान जगन्नाथ की विग्रह मूर्तियों को यहीं से पुरी (उड़ीसा) ले जाया गया था। प्रचलित किंवदंती के अनुसार प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को भगवान जगन्नाथ यहां विराजते हैं।

प्राचीन काल से ही दक्षिण कौशल के नाम से जाने वाला यह क्षेत्र धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृध्द रहा है। यहां शैव, वैष्णव, जैन और बौद्ध धर्मो की मिली जुली संस्कृति रही है। छत्तीसगढ़ का यह क्षेत्र रामायणकालीन घटनाओं से भी परिपूर्ण है।

इतिहास :

इस स्थान का वर्णन महाकाव्य रामायण में भी है । इसी स्थान पर भगवान श्री राम ने सब्री नामक कोल आदिवासी महिला के जूठे बेर खाए थे । शबरी की स्मृति में शबरी नारायण स्थान बसा है । यह स्थान बैकुंठपुर , रामपुर विष्णुपुरी और नारायणपुर के नाम से विख्यात था।

शिवरी नारायण का धार्मिक महत्व :

शिवरीनारायण स्थित सबरीनारायण मंदिर का निर्माण शबर राजा द्वारा कराया गया मानते है । यह इंट और पत्थर से बना ११/१२ वीं सदी के केशवनाराय का मन्दिर है।

महानदी के तट पर महेश्वर महादेव और कुल देवी शीतला माता का भव्य मन्दिर बराम बाबा की मूर्ति और सुंदर घाट है जिसका निर्माण संवत १८९० में मालगुजार माखन साव के पिता श्री मयाराव साव और चाचाश्री मंसराम और सर्धा राम साव ने कराया है।

किंवदंती:

एक किंवदंती के अनुसार शिवरीनारायण के शबरीनारायण मन्दिर और जांजगीर के विष्णु मन्दिर के छैमासी रात में बनने की प्रतियोगिता थी। सूर्योदय के पहले शिवरीनारायण का मन्दिर बनकर तैयार हो गया इसलिए भगवान नारायण उस मन्दिर में विराजे और जांजगीर का मन्दिर अधूरा ही छोड़ दिया गया जो आज उसी रूप में स्थित है।

फ्रेंडशीप डे

अपने दोस्तों को खास महसूस कराने के लिए दोस्ती को खुशी के रूप में मनाने के लिए पूरे विश्व में अगस्त के पहले रविवार को फ्रेंडशिप डे के रूप में मनाया जाता है। इससे जुड़ी एक कहानी बहुत मशहूर है ऐसा कहा जाता है कि सन 1935 में अमेरिकी सरकार द्वारा एक व्यक्ति को सत्ता के रूप में फांसी दी गई। इससे उस व्यक्ति के दोस्त को इतना दुख पहुंचा कि उसने भी आत्महत्या कर लिया।अमेरिकी सरकार ने उस व्यक्ति के भावनाओं की कद्र करते हुए उस दिन को दोस्तों के नाम पर कर दिया तथा तब से फ्रेंडशिप डे की शुरुआत हुई।

कहते हैं कि इंसान को प्रत्येक रिश्ता जन्म से ही प्राप्त होता है दूसरे शब्दों में कहें तो ईश्वर पहले से बना कर देता है, पर दोस्ती ही एक ऐसा रिश्ता है जिसका चुनाव वह खुद करता है। सच्ची दोस्ती कभी रंग-रूप, जात-पात, ऊंच-नीच, अमीरी-गरीबी कुछ नहीं देखता। आमतौर पर यह समझा जाता है कि दोस्ती हम-उम्र के बीच होती हैं पर यह गलत है। दोस्ती किसी भी उम्र में और किसी के साथ भी हो सकती है।

जीवन में लोगों के अनेक दोस्त बनते हैं, बचपन के दोस्त स्कूल कॉलेज के दोस्त व्यवसायिक दोस्त (टाइमपास दोस्त) आदि इनमें से कुछ वक्त गुजरने के साथ पीछे छूट जाते हैं और कुछ जीवन भर आपके हर एक अच्छे बुरे परिस्थिति में आपके साथ रहते हैं।अपनी परेशानी की बात अपने दोस्तों को बताने से थोड़ा ही सही पर मन का बोझ कम हो जाता है। साथ ही दोस्ती इंसान को सकारात्मक ऊर्जा से भर देता हैं।

कभी सीखना और सिखाना भी दोस्तों से ही होता है। आप भले ही सुधर जाओगे पर यह दोस्त आपके पैर पकड़ कर आपको वापस खींच लेंगे। अच्छे हो या बुरे वक्त में कई बार साथ रहेंगे तो कई बार आप को अकेला छोड़ देंगे, पर हां एक बात जरूर होती है इन यादों में ना फेंकने और लपेटने की जो कला होती है वह और किसी में नहीं होती, सच कहें तो यह इस बात पर माहिर होते हैं, पर जैसे भी होते हैं अच्छे होते हैं। जिंदगी में ना बहुत बड़ा ऊपर व्यक्ति की मित्रता होती है। शुरू- शुरू में स्कूल के दिनों में एक ही बेंच पर बैठ कर अपना नाम लिखना हम दोस्तों के साथ ही करते हैं। कॉपी की बीच पेंसिल के छिलके,मोर के पंख रखना,यह कह कर कि विद्या आयेगी। बिना किसी बात के टीचर के क्लास लेने के दौरान मुंह पर हाथ रखकर हंसना और सजा मिलने पर भी कोई खास फर्क नहीं पड़ता, सच कहूं तो सबसे ज्यादा सुखद समय होता है। बचपन की दोस्ती हमेशा मीठी याद बनकर हमेशा साथ रहती है।

फिर अब कॉलेज के दिनों में किसी दुकान पर जाकर चाय समोसे उन दोस्तों के साथ खाना जो खाने के बाद बोलते हैं कि भाई पैसे आज तू दे दे कल मैं दे दूंगा। एक बाइक पर

चार सवार दोस्तों के साथ घूमना, दोस्तों के पिट जाने पर कारण का पता भी ना लगाना, और लड़ाई के लिए तैयार हो जाना।क्लास बंक मारकर बाहर किसी बगीचे पर घंटों यारों के साथ बैठे रहना, परीक्षा के बिल्कुल करीब आ जाने पर रात भर कॉल पर नोट्स जुगाड़ करने की बातें और बीच-बीच में क्रश की यादों और उनका जिक्र करना दोस्ती की निशानी है। जिंदगी में उस आनंद भरे लम्हों में से है जिसे हम कभी नहीं भूल पाएंगे।

फिर जब हम कॉलेज से निकल जाएंगे ग्रेजुएशन हमारी कंप्लीट हो जाएगी तब ऑफिस के दोस्तों के बीच दिखाने के लिए खुद को मेहनती बताने की कोशिश करना। इसके साथ ही काम के दबाव के बीच किसी एक बेतुके जोक पर हंसना, लंच टाइम में घर की सास- बहू की बातें होंगी, फिर बॉस से पड़ी डांट पर दोस्तों का समझाना और उनका यह कहना कि तुमसे यह काम हो पाएगा और जरूर होगा दोस्तों की बातें बहुत हिम्मत देगी।

आजकल के समय में सोशल मीडिया की दोस्ती का बहुत प्रचलन है, हम अपने दोस्तों के ग्रुप में बैठकर एक दूसरे से बात करने के स्थान पर अपने सोशल साइट्स के दोस्तों के साथ बात करते हैं। देश के कोने कोने तक हमारे दोस्तों की कमी नहीं होती हमारे मित्र चारों तरफ फैले हुए होते हैं। जिनसे कभी मिलना तो नहीं हो पाता पर हम अपनी समस्या उनके साथ बांटते हैं।

ऐसे ही जिंदगी दोस्तों के साथ जी जाती हैं कुछ दोस्त बूढ़े होने तक साथ रहेंगे तो कुछ पल भर के लिए पर दोस्ती चाहे जैसी भी हो दोस्ती में जो बात है वह और किसी में नहीं। लोग कुछ भी भले ही छोड़ सकते हैं पर दोस्ती करना कभी नहीं छोड़ेंगे।
और सच्ची दोस्ती में आप चाहे कितने भी बड़ी से बड़ी मुसीबत में क्यों ना हो आपके सच्चे दोस्त आपके साथ हमेशा खड़े रहेंगे।

Friendship is the part of heart,
Heart is the the part of feelings,
Feelings is the symbol of care &
Care is the special word for friends....

By Domendra Kumar Dheeraj
B.com.1st year

छेरछेरा

छत्तीसगढ़ का पारंपरिक त्यौहार छेरछेरा

छेरछेरा छत्तीसगढ़ का लोक त्यौहार है जो पौष के पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है ,यह पूरे छत्तीसगढ़ में बड़े ही हर्षोल्लाश के साथ मनाया जाता है , पौष पूर्णिमा से लगभग 15 दिन पहले से ग्रामीण टोली बनाते है जो लकड़ी के डंडे लेकर मंदार झांझ मंजीरे और अन्य पारंम्परिक वाद्य यंत्रो के साथ पारम्परिक लोक गीतो की धुन में घर – घर जाकर नृत्य करतें है ,बच्चो के साथ साथ हर वर्ग के पुरुष इस दौरान घर घर जाते है और नृत्य करते है , जिसके बदले में अन्न दिया जाता है ।

डंडा नृत्य की वैसे तो कोई विशेष वेशभूषा नहीं होती लेकिन आदिवासी बाहुल्य वाले क्षेत्रों में आदिवासी विशेष वेशभूषा धारण करते हैं , छेरछेरा त्यौहार को नए फसल कटने की खुशी में मनाया जाने वाले त्यौहार भी कहा जाता है ..... क्योकि किसान धान की कटाई और मिसाई पूरा कर लेते है और लगभग 2 महिने फसल को घर तक लाने जो जी तोड़ मेहनत करते है उसके बाद फसल को समेत लेने की खुशी में भी इस त्यौहार को मनाने की बात भी कही जाती है सही भी है ....

कुछ पारम्परिक दोहे

" चाउंर के फरा बनार्येव , थारी म मुही मही
धनी मोर पुन्नी म , फरा नाचे हुआ हुआ
तीर तीर मोटियारी , माझा म हुरी हुरी
चउर के फरा बनार्येव , थारी म मुही मुही !'
..... 'तास रे तास लोहार घर तास .....
लउहा लउहा बिदा करव , जाबो अपन पारा !
छेर छेरा ! छेर छेरा !/ माई कोठी के धान ला हेर हेरा !'

पौष पूर्णिमा के दिन बच्चे , जवान सभी घर घर जाकर ' छेर छेरा ! माई कोठी के धान हेर हेरा !' कहकर चिल्लाते है और दान के रुप में लोग उन्हें धन देते है .....

नाम- अश्वनी कुमार खुटे

कक्षा- बी कॉम द्वितीय वर्ष

शहीद बीर नारायणसिंह

शहीद बीर नारायणसिंह ह छत्तीसगढ़ के पहिली शहीद आय। सन् 1857 म अत्याचारी अंग्रेज मन बीर नारायण सिंह ल फांसी दे दे रिहिन हे। ओखर अपराध अतके रिहिस के सन् 1856 के भयंकर दुकाल के समे वो ह अपन जमींदारी के भूख से तड़फत जनता बर एक झन बैपारी के अनाज गोदाम के तारा टोर के उहां भराय अनाज ल जनता म बांट दे रिहिस। अतके नहीं, ये बात के जानकारी लगे हाथ वो समे के रइपुर के डिप्टी कमिश्नर ल घलो पठो दे रिहिस के ये काम वोला भूख म तड़फत जनता के भूख मिटाय खातिर करना परिस। फेर अंगरेज कमिश्नर ल ओखर मानवता अउ ईमानदारी नई भाइस। वोला तो जमाखोर बैपारी के सिकायत म नारायण सिंह ऊपर कार्रवाई करना पसंद आइस अउ इही बात म डिप्टी कमिश्नर ह बीर नारायण सिंह बर गिरफ्तारी वारंट निकाल दिस। वो अत्याचारी डिप्टी कमिश्नर के नांव एलियट (चार्ल्स इलियट) रिहिस। तेखरे पाय के कतको झिन जुन्ना छत्तीसगढ़िया मइनखे के इलियट नांव घलो सुने म मिल जाथे। खैर, हमला नामकरन म धियान नइ दे के शहीद बीर नारायण सिंह के किस्सा कोती धियान देना हे।

तो ये शहीद बीर नारायण सिंह के जन्म सोनाखान के जमींदार रामराय बिंझवार राजपूत के घर सन् 1795 ई. के कोनो तारीख म होय रिहिस। तारीख के पक्का जानकारी नइ मिलय। अपन बाप के इंतकाल के बाद 35 बछर के उमर म नारायण सिंह सोनाखान के जमींदार बनिस। उन बड़ धार्मिक, गियानी, मिलनसार अउ परोपकारी प्रवृत्ति के रहिन। एखरे संगे-संग उंखर म धीरज, साहस अउ प्रजापालक के गुन घलो लबालब भरे रिहिस। वो सिरतोन सोनाखान के सांन रिहिस। वो ह निच्चट सादा जीवन बिताय। वो ह महल अटारी म नहि भलुक माटी अउ बांस के बने कच्चा

Pratibha Chauhan
B.Com.Final

जीवन की सीख

एक बार किसी गाँव मे एक बुढ़िया अपनी झोपड़ी के बाहर कुछ ढूंढ रही थी तभी एक आदमी की नजर उस पर पड़ती है आदमी बोला आम्मा इतने रात में रोड के नीचे क्या ढूंढ रही हो, उस व्यक्ति ने पूछा। उस बुढ़िया ने उत्तर दिया, कुछ नहीं मेरी सुई गुम गयी है बस वही खोज रही हू। उस व्यक्ति के आश्चर्य से पूछा कहा है सुई पीर क्या था वह व्यक्ति भी उसकी मदद करने के लिये रुक गया और साथ में सुई को खोजने लगा। कुछ देर के बाद और लोग वहाँ आ गए और इस खोज के अभियान में शामिल हो गए देखते ही देखते लगभग पूरा गाँव वहा आ गया। सभी के सभी बड़े ध्यान से उस सुई को खोजने मे लगे तभी किसी ने उस बुढ़िया से पूछा, अरे आम्मा जरा ये तो बताओ कि सुई गिरी कहा थी उस बुढ़िया ने जवाब दिया कि बेटा सुई तो झोपड़ी के अंदर गिरी थी ये सुनते ही सभी बड़े क्रोधित हो गए और भीड़ में से किसी एक व्यक्ति ने कहा बड़े कमाल करती हो आम्मा हम इतनी देर सुई यहा ढूंढ रहे हैं जबकि सुई झोपड़ी में गिरी हुई थी आखिर सुई वहा खोजने के बजाय यहा बाहर क्यू खोज रही हो उस बुढ़िया ने कहा क्योंकि रोड पर लाइट जल रहा था इसलिए मैं सुई यहा ढूंढ रही हू सभी लोग ये सुनकर गुस्से में बहुत तिलमिलाए और आखिर कर भी क्या सकते थे ओ सभी वहा से चले गए

ये कहानी से हमें यह शिख मिलती है कि हम सब अपनी जिंदगी में यही गलती करते हैं अक्सर हम सभी का ध्यान वहा होता है जहाँ उजाला होता है जबकि अपका ध्यान वहा होनी चाहिए जहा आपकी सुई गिरी है हमको अपनी जिंदगी में जो करना है उस पर ध्यान नहीं देते हैं बल्कि देखते हैं दूसरो का उजाला। जब तक आप दूसरो की तरक्की को छोड़ कर अपनी मेहनत पर ध्यान नहीं देते तब तक आप कभी सफल नहीं हो पाओगे

Maheshwar Kumar Patel
B.Com 1st year

हाय रे मोबाइल

हाय रे मोबाइल तोर भारी हे गुन , जेला देख गावत हावय तोरेच धुन।

मोबाइल रखना ईजी हे ,जेला देख तेहर बिजी हे ।

कवरेज ला बाहर तभो मारत देखा पावर हे।

3जी अब नन्दावत हे, 4जी म सब पगलावत हे।

मोबाइल रखके संगी सब झिन भारी मटमटावत हे ।।

मोबाइल म बैलेंस हे जीरो तभो बनत हे सब झिन हीरो, कहिथे सरकारी मोबाइल हे मिले, अउ सिम तो ए सगा ओकर जिओ।।

त इतराबो काबर नई, बकबकाबो काबर नई ,मोबाइल रखके हमन मटमटाबो काबर नई।।

आजकल नया गेम आय हवय पब्जी ,जेला खेलत हावय संगी सब झि ।

जै पब्जी कइके करथे सब ओकर पूजा, देखा अब बन गे गेम ह रबजी।।

वॉट्सअप के जमाना हे ,बाइ फेस गोठियाना हे।

अउ वीडियो चैटिंग करके सबला थोथना ल देखाना हे।।।

पहिली टिक टॉक अब शेयर चैट के शोर, गुंजत हवय ओकर हल्ला चारो ओर ।

ओमा सब झिन संगी बस एके ठीन बात कहिथे कि लाइक कर दे वीडियो ल मोर ।।

लाइका सिआन नोनी बाबू ,जम्मो झिन परे हे मोबाइल के पाछू।

कोनो ल कतको रोक मोबाइल चलावत नई हे कम, मोबाइल म बिजी होगे संगी दुनिया ह एकदम।।

अब एकर बारे म मै का का बताव कतका महिमा ल संगी एकर सुनाव ।।। हाय रे मोबाइल तोर भारी हे गुन जेला देख गावत हवय तोरेच धुन।।।

Anjali Dinkar
B.Sc. II

छत्तीसगढ़ का पहला फ़िल्म

" कही देबे संदेश"

छत्तीसगढ़ी भाषा में बाना " कही देबे संदेश"छत्तीसगढ़ का प्रथम फ़िल्म है जो 1965 में बना था। इस फ़िल्म को बनाया था श्री मनु नायक जी ने । इन्होंने इस फ़िल्म का निर्माण 1962 में बनी भोजपुरी फ़िल्म "गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो" की सफलता से प्रेरणा लेकर अपनी मातृभाषा छत्तीसगढ़ी में फ़िल्म बनाने की ठानी और "सिने एडवांस " में छपवा दिया की मैं छत्तीसगढ़ी भाषा में फ़िल्म बनाऊंगा। चूँकि नौकरी की तलास में 1957 में वें मुम्बई चले गए थे और एक फ़िल्म कंपनी में कॉपीराइटर का काम कर रहे थे तो उनका परिचय फिल्मी दुनिया के जाने माने सितारों से था । सबसे पहले वें मलय चक्रवर्ती के पास गए उन्होंने हामी भरी और संगीत देने को तैयार हो गए। फ़िल्म में दूसरे कलाकारों में गायक - मुहम्मद रफ़ी , मन्नाडे,महेंद्र कपूर मिनुपुरुषोत्तम ,जैसे कलाकार थे ।जबकि नायक बने कानमोहन और नायिका थीं सुरेखा । सभी कलाकार मुम्बई से थे तो उन्हें छत्तीसगढ़ी भाषा नही आता था अतः राज्य में होने वाले नाचा गम्मत को बार बार दिखाया गया और उन्हें रटा रटाया छत्तीसगढ़ी सिखाया गया । फ़िल्म बनाने में खर्च बहुत होना था तो मनु नायक जी ने 25000 रु उधार लिया । मनु नायक जी छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचल के थे अतः उन्हें उस दौर के सभी समस्याओ , महिलाओ की स्थिति ,सामाजिक भेदभाव , आपसी लड़ाई झगड़े , आदि से वाकिफ थे तो उन्होंने फ़िल्म बनाने के लिए सामाजिक मुद्दा को चुना और फ़िल्म में नायक को सतनामी समाज का और नायिका को ब्राह्मण समाज का बनाया और इन्ही के अंतर्जातीय प्रेम विवाह को ध्यान में रखते हुए लोगो में सामाजिक संदेश देने के उद्देश्य से फ़िल्म का नाम रखा " कही देबे संदेश" । फ़िल्म की सूटिंग (नवंबर1964)रायपुर के पलारी गांव में हुआ। सभी कलाकार मुम्बई से छत्तीसगढ़ आये । 16अप्रैल 1965 को फ़िल्म रायपुर ,भाठापारा और बिलासपुर के सिनेमा घरो में रिलीज हुआ। फ़िल्म काफी लोगो को पसंद आया किन्तु सामाजिक मुद्दे पर होने के कारण समाज के ठेकेदारो ने जोरदार विरोध किया , पोस्टर जलाये विरोध प्रदर्शन किया और फ़िल्म को बैन कराने दिल्ली पहुचे। संसद ने मनु नायक जी के नाम से नोटिस निकाला और फ़िल्म पर जवाब माँगा और बैन लगाने की बात कही । 1965 के दौर में छत्तीसगढ़ से मिनीमाता सांसद थी तो मनु नायक जी ने उनसे संपर्क किया और दिल्ली पहुचे , विवाद ज्यादा बढ़ता देख उस समय के सूचना एवं प्रसारण मंत्री इंदिरा गांधी जी ने मिनीमाता के आग्रह पर छत्तीसगढ़ के सांसदों ,विधायको के साथ दिल्ली में ही फ़िल्म को देखी और फ़िल्म उन्हें काफी पसंद आया ।उन्होंने तुरंत समाचार पत्रो में बयान जारी करते हुए कहा" यह फ़िल्म राष्ट्रीय एकता पर आधारित है और सामाजिक भेदभाव का विरोध एवं आपसी भाईचारे का संदेश देती है"। इस प्रकार विरोध ,धरना प्रदर्शन बन्द हुआ। मध्यप्रदेश सरकार ने इस फ़िल्म से खुस होकर इसे टेक्स फ्री कर दिया ।फ़िल्म लगातार 8 सप्ताह तक चली । यह फ़िल्म किसी भी फ़िल्म का नकल नही था अपने में बिल्कुल नया था। यह न केवल छत्तीसगढ़ का बल्कि पूरे भारत में सामाजिक मुद्दे पर बना प्रथम फ़िल्म

है। इस फ़िल्म में ग्रामीण जीवन से लेकर सामाजिक भेदभाव , नारियो की दुर्दसा और ग्रामीण सोच को प्रदर्षित करती है ।

परंतु इतनी विशेषताओ के बावजूद आज तक न तो इस फ़िल्म को राज्य सरकारों के द्वारा किसी प्रकार का पुरस्कार मिला न इसके निर्माता को । अब फ़िल्म को रंगीन पर्दे पर लाने की जरूरत है लेकिन कलाकारों की उदासीनता के कारण नही आ पा रही है क्योकि सरकार के द्वारा किसी भी प्रकार से सहयोग नही मिल पा रहा है जो की छत्तीसगढ़ में कमजोर होते छालीवुड का बड़े कारणों में से एक है।

लीलाधर टंडन
M.A forth semester
(Political science)

स्रोत - मनु नायक जी द्वारा दिया गया विभिन्न चैनलो को इंटरवियू ।

Photo Gallery 2019-20

Winner Team, विकास खंड स्तरीय युवा महोत्सव (पामगढ़), खेल एवं युवा कल्याण विभाग, जांजगीर -चाँपा (छ.ग.)

Tobacco Control and Health Awareness

Plantation

Ramesh Patel Sector Level Games Korba 2019

Sector Level Participation of Students at Korba

Jaisingh B. Com III Short Put throw Sector Level Games 2019

Arti Maravi B. Com I 100 m Race (W) Sector Level 1st Position

Geographical Tour

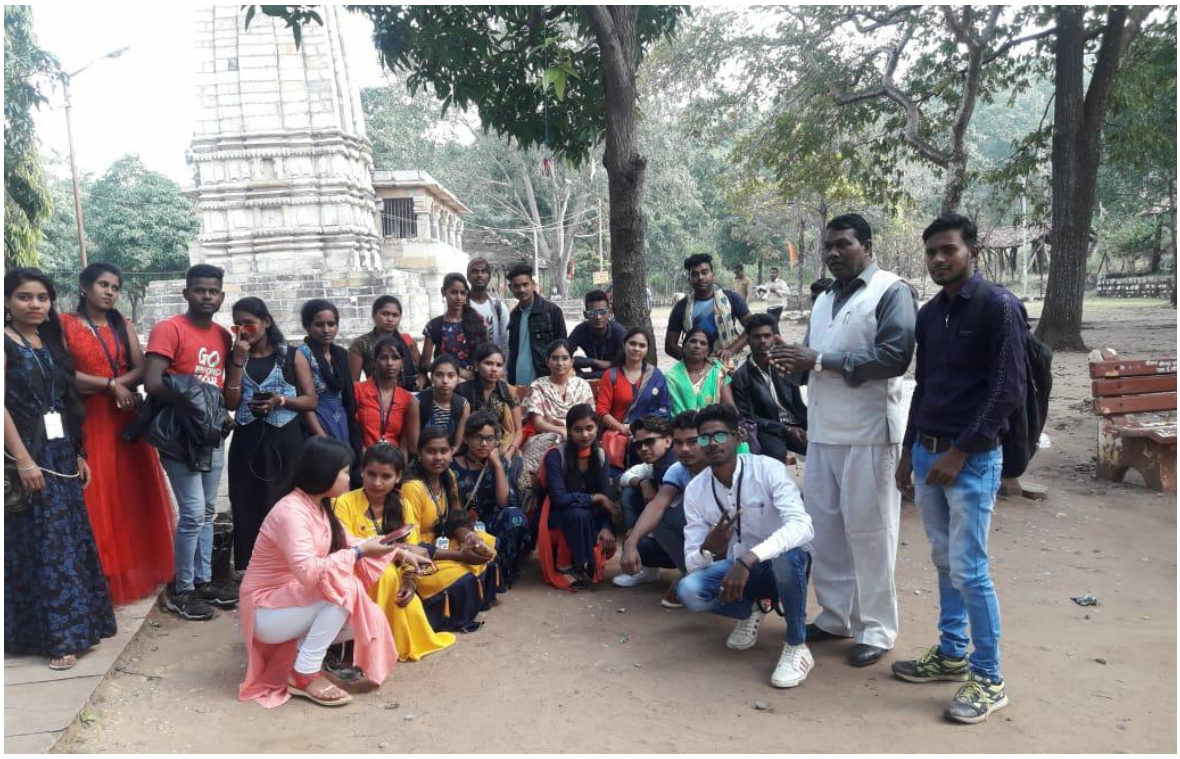

Sector Level Runner Up Cricket Team 2018

NSS 2019

डॉ. भीमराव अम्बेडकर
शासकीय महाविद्यालय
जिला- जाँजगीर - चाम्पा (छत्तीसगढ़)
राष्ट्रीय सेवा योजना
डॉ. भीमराव अम्बेडकर शासकीय महाविद्यालय
पामगढ़, जिला - जांजगीर चाम्पा (छत्तीसगढ़)
आपका हार्दिक स्वागत करता है...

तहसील कार्यालय पामगढ़ जिला

राष्ट्रीय सेवा योजना
भीमराव अम्बेडकर शासकीय महाविद्यालय
पामगढ़, जिला - जांजगीर चाम्पा (छत्तीसगढ़)
आपका हार्दिक स्वागत करता है...